

## सूरह रहमान - 55



### सूरह रहमान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 78 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ अल्लाह के शुभ नाम ((रहमान)) से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह रहमान है।
- इस की आरंभिक आयतों में रहमान (अत्यंत कृपाशील) की सब से बड़ी दया का वर्णन हुआ है कि उस ने मनुष्य को कुर्आन का ज्ञान प्रदान किया और उसे बात करने की शक्ति दी जो उस का विशेष गुण है।
- फिर आयत 12 तक धरती तथा आकाश की विचित्र चीजों का वर्णन कर के यह प्रश्न किया गया है कि तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों तथा गुणों को नकारोगे?
- इस की आयत 13 से 30 तक जिन्नों तथा मनुष्यों की उत्पत्ति, दो पूर्व तथा पश्चिमों की दूरी, दो सागरों का संगम तथा इस प्रकार की अन्य विचित्र निशानियों और अल्लाह की दया की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- आयत 31 से 45 तक मनुष्यों तथा जिन्नों को उन के पापों पर कड़ी चेतावनी दी गई है कि वह दिन आ ही रहा है जब तुम्हारे किये का दुःखदायी दण्ड तुम्हें मिलेगा।
- अन्त में उन का शुभ परिणाम बताया गया है जो अल्लाह से डरते रहे। और फिर स्वर्ग के सुखों की एक झलक दिखायी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अत्यंत कृपाशील ने।
2. शिक्षा दी कुर्आन की।
3. उसी ने उत्पन्न किया मनुष्य को।
4. सिखाया उसे साफ़ साफ़ बोलना।

الرَّحْمَنُ

عَلَّمَ الْقُرْآنَ

خَلَقَ الْإِنْسَانَ

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ

5. सूर्य तथा चन्द्रमा एक (नियमित) हिसाब से हैं।  
 6. तथा तारे और वृक्ष दोनों (उसे) सज्दा करते हैं।  
 7. और आकाश को ऊँचा किया और रख दी तराजू<sup>[1]</sup>  
 8. ताकि तुम उल्लंघन न करो तराजू (न्याय) में।  
 9. तथा सीधी रखो तराजू न्याय के साथ और कम न तौलो।  
 10. धरती को उस ने (रहने योग्य) बनाया पूरी उत्पत्ति के लिये।  
 11. जिस में मेवे तथा गुच्छे वाले खजूर हैं।  
 12. और भूसे वाले अन्न तथा सुगंधित (पुष्प) फूल हैं।  
 13. तो (हे मनुष्य तथा जिन्न!) तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?  
 14. उस ने उत्पन्न किया मनुष्य को खनखनाते ठीकरी जैसे सूखे गारे से।  
 15. तथा उत्पन्न किया जिन्नों को अग्नि की ज्वाला से।  
 16. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

الْشَّمْسُ وَالْقَمَرُ يُحْسِبَانِ ۝

وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ۝

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝

أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝

وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۝

وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۝

فِيهَا فَالَكُمُوهُ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۝

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَارٍ ۝

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

1 (देखिये: सूरह हदीद, आयत: 25) अर्थ यह है कि धरती में न्याय का नियम बनाया और उस के पालन का आदेश दिया।

17. वह दोनों सूर्योदय<sup>[1]</sup> के स्थानों तथा दोनों सूर्यास्त के स्थानों का स्वामी है।
18. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?
19. उस ने दो सागर बहा दिये जिन का संगम होता है।
20. उन दोनों के बीच एक आड़ है। वह एक-दूसरे से मिल नहीं सकते।
21. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
22. निकलता है उन दोनों से मोती तथा मूँगा।
23. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
24. तथा उसी के अधिकार में है जहाज़ खड़े किये हुये सागर में पर्वतों जैसे।
25. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
26. प्रत्येक जो धरती पर है नाशवान है।
27. तथा शेष रह जायेगा आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का मुख (अस्तित्व)।

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ۝

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

كُلٌّ مِّنْ عِندِهَا فَإِنَّ ۝

وَيَسْأَلُ وَجْهَ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝

1 गर्मी तथा जाड़े में सूर्योदय तथा सूर्यास्त के स्थानों का। इस से अभिप्राय पूर्व तथा पश्चिम की दिशा नहीं है।



28. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
29. उसी से माँगते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं। प्रत्येक दिन वह एक नये कार्य में है।<sup>[1]</sup>
30. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
31. और शीघ्र ही हम पूर्णतः आकर्षित हो जायेंगे तुम्हारी ओर, हे (धरती के) दोनों बोज़<sup>[2]</sup> (जिन्नो और मनुष्यो!)<sup>[3]</sup>
32. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
33. हे जिन्न तथा मनुष्य के समूह! यदि निकल सकते हो आकाशों तथा धरती के किनारों से तो निकल भागो। और तुम निकल नहीं सकोगे बिना बड़ी शक्ति<sup>[4]</sup> के।
34. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
35. तुम दोनों पर अग्नि की ज्वाला तथा धूवाँ छोड़ा जायेगा। तो तुम अपनी सहायता नहीं कर सकोगे।

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيَّهَ الثَّقَلَيْنِ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

يَعِصْرَ الْجِبِّ وَالْإِنسِ إِنَّ اسْتَطَعْتُمَا أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَنٍ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝

1 अर्थात् वह अपनी उत्पत्ति की आवश्यकतायें पूरी करता, प्रार्थनायें सुनता, सहायता करता, रोगी को निरोग करता, अपनी दया प्रदान करता, तथा अपमान-सम्मान और विजय-प्राजय देता और अगणित कार्य करता है।

2 इस वाक्य का अर्थ मुहावरे में धमकी देना और सावधान करना है।

3 इस में प्रलय के दिन की ओर संकेत है जब सब मनुष्यों और जिन्नो के कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

4 अर्थ यह है कि अल्लाह की पकड़ से बच निकलना तुम्हारे बस में नहीं है।

36. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

37. जब आकाश (प्रलय के दिन) फट जायेगा तो लाल हो जायेगा लाल चमड़े के समान।

38. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

39. तो उस दिन नहीं प्रश्न किया जायेगा अपने पाप का किसी मनुष्य से न जिन्न से।

40. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

41. पहचान लिये जायेंगे अपराधी अपने मुखों से, तो पकड़ा जायेगा उन के माथे के बालों और पैरों को।

42. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

43. यही वह नरक है जिसे झूठ कह रहे थे अपराधी।

44. वह फिरते रहेंगे उस के बीच तथा खौलते पानी के बीच।

45. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

46. और उस के लिये जो डरा अपने पालनहार के समक्ष खड़े होने से दो बाग़ हैं।

47. तो तुम अपने पालनहार के

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٨﴾

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ﴿٣٩﴾

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

يَعْرِفُ الْمَجْرُمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٢﴾

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمَجْرُمُونَ ﴿٤٣﴾

يَطُوفُونَ فِيهَا وَبَيْنَ حَبِيلِهَا ﴿٤٤﴾

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾

وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٍ ﴿٤٦﴾

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾

किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

48. दो बाग़ हरी भरी शाखाओं वाले।

49. तो तुम अपने पालनहार के  
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

50. उन दोनों में दो जल स्रोत बहते होंगे।

51. तो तुम दोनों अपने पालनहार  
के किन - किन पुरस्कारों को  
झुठलाओगे?

52. उन में प्रत्येक फल के दो प्रकार होंगे।

53. तो तुम अपने पालनहार के  
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

54. वह ऐसे बिस्तरों पर तकिये लगाये  
हुये होंगे जिन के अस्तर दबीज़  
रेशम के होंगे। और दोनों बाग़ों (की  
शाखायें) फलों से झुकी हुई होंगी।

55. तो तुम अपने पालनहार के  
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

56. उन में लजीली आँखों वाली स्त्रियाँ  
होंगी जिन को हाथ नहीं लगाया  
होगा किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और  
न किसी जिन ने।

57. तो तुम अपने पालनहार के  
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

58. जैसे वह हीरे और मूंगे हों।

59. तो तुम अपने पालनहार के  
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

60. उपकार का बदला उपकार ही है।

ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۝

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ۝

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ نَاقَةٍ زَوْجَانِ ۝

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

مُتَكَبِّرِينَ عَلَى فَرُشٍ مُطَابِرَةٍ ۚ مِنْهُمَا مِنْ زَوْجَيْنِ وَجَعْنَا  
الْجَنَّتَيْنِ دَاخِلَ ۝

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

فِيهِمْ قُصْرٌ لَاحِظُونَ ۚ لَأَمَّا الْأُنثَىٰ تَبْلُغُهُمْ ۚ فَلَا  
جَانِ ۝

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

كَانَتْهُنَّ أَيَّامُتٌ وَالْمَرْجَانُ ۝

فَيَأْتِي آلَهِمَا إِلَهُكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۝



61. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे? فَيَأْتِي آلَآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٥﴾
62. तथा उन दोनों के सिवा<sup>[1]</sup> दो बाग़ होंगे। وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ﴿٥٦﴾
63. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? فَيَأْتِي آلَآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٧﴾
64. दोनों हरे-भरे होंगे। مُدْمَعَتَيْنِ ﴿٥٨﴾
65. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? فَيَأْتِي آلَآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٩﴾
66. उन दोनों में दो जल स्रोत होंगे उबलते हुये। فِيهِمَا عَيْنَيْنِ تَظَاخَتَانِ ﴿٦٠﴾
67. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? فَيَأْتِي آلَآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦١﴾
68. उन में फल तथा खजूर और अनार होंगे। فِيهِمَا نَارُكُهُ وَشَجَرٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٢﴾
69. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? فَيَأْتِي آلَآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٣﴾
70. उन में सुचरिता सुन्दरियाँ होंगी। فِيهِنَّ خَيْرٌ حَسَنٌ ﴿٦٤﴾
71. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? فَيَأْتِي آلَآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٥﴾
72. गोरियाँ सुरक्षित होंगी खेमों में। حُورٌ مُّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٦٦﴾
73. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे? فَيَأْتِي آلَآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٦٧﴾

1 हदीस में है कि दो स्वर्ग चाँदी की हैं। जिन के बर्तन तथा सब कुछ चाँदी के हैं। और दो स्वर्ग सोने की, जिन के बर्तन तथा सब कुछ सोने का है। और स्वर्ग वासियों तथा अल्लाह के दर्शन के बीच अल्लाह के मुख पर महिमा के पर्दे के सिवा कुछ नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 4878)

74. नहीं हाथ लगाया होगा<sup>[1]</sup> उन्हें किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन ने।

لَمْ يَطِئْتُهُمْ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۝

75. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَمَا أَتَى آلَهُ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ۝

76. वे तकिये लगाये हुये होंगे हरे गलीचों तथा सुन्दर विस्तरों पर।

مُتَكِبِينَ عَلَى رَفْرَفٍ خُضِرٍ وَعَجَبَرِيِّ حَسَانٍ ۝

77. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَمَا أَتَى آلَهُ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ۝

78. शुभ है आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का नाम।

تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝

1 हदीस में है कि यदि स्वर्ग की कोई सुन्दरी संसार वासियों की ओर झाँक दे, तो दोनों के बीच उजाला हो जाये। और सुगंध से भर जायें। (सहीह बुखारी शरीफ: 2796)